धान के कन्सा ला फोरे से, पैदावार बाढ़थे

(कन्सा ला फोरे के तरीका)

लोक साहित्य परिषद

प्रकाशन – ३ जून, १९९३
शहीद दिवस

लोक साहित्य परिषद की
छत्तीसगढ़ी भाषा प्रसार समिति
का पहला प्रकाशन

सम्पर्क – लोक साहित्य परिषद
द्वारा – छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. ऑफ़िस
दल्ली राजहरा
दुर्ग [म० प्र०]
४९१ २२८

मुद्रक – विजय प्रिंटिंग प्रेस,
बालोद, जिला दुर्ग [म० प्र०]

सहयोग राशि – दो रुपये मात्र

धान के कन्सा ला,
फोरे से,
पैदावार बाढ़थे,
एकर थोरकुन जानकारी,

संगवारी,

दुनियां के जम्मो धान उपजइया अऊ भात खवैया मन हमर छत्तीसगढ़ ला धान के कटोरा के नाम से जानथे। काबर को दुनियां में अलग-अलग किसम के धान हमर छत्तीसगढ़ ले गेय हे। फेर आज स्थिति बदल गेय हे। जादा पैदावार अऊ कम किरा लगथे कही के किसान मन भ्रम में खास कर एक किसम के धान बोयें के शुरु कर देय हे।

फेर ये तरीका में दू ठन खतरा हे। पहली खतरा ये हे कि, अगर कोई समय फसल में किरा लग गें या पाला मार दिस तब, जिहां तब ले ऐसन किसम के धान बोवा हे उहाँ तक के बीजा हा नाश हो जये। दूसरा खतरा ये हे कि हमर पुरखा मन जौन चंउर के भात में जादा ताकत हे, सुगंध हे, कम पानी या जादा पानी से लड़े के ताकत वाला धान ला अपन मेहनत से तैयार करे हे, वो अलग अलग देशी धान के बीजा खतम होय के खतरा हे।

येकर बर हमर देश के सबसे बड़े धान वैज्ञानिक डाक्टर रिछारिया हर धान के कन्सा ला फोर-फोर के एक ठन धान के बीजा से अड़ाई गाड़ा धान उपजाय के तरिका निकाले हे। ये तरीका ले गांव के किसान मन अपन देशी बीजा अऊ उपज ला बढ़ा सकथे।

धान के कन्सा ला,
फोरे से,
पैदावार बाढ़थे,

धान के कन्सा ला फोरना जरुरी हे,

अलग–अलग किसम के धान के जरुरी,

चऊर हमर मुख्य आहार हावे, धान के उपज ला बढ़ाना जरुरी हे। जोन हर अलग–अलग धान बोये से हो सकथे ।

जमीन के हिसाब से धान बोये के तरीका

अपन जमीन अऊ पानी के समस्या ला देख के किसान अपन खेत में धान बोये के चुनाव करथे । येकरे सेती दुनियां में अलग–अलग किसम के धान बगरगे । जोन धान टंगहा जमीन में होथे ओला जादा पानी वाला जमीन में बोय से पैदावार बने नई होय । अऊ जौन धान जादा पानी में बने होथे, ओला टंगहा जमीन में बोय से पैदावार के बात तो बहुत दूर हे, बाल निकलेच ला छौड़ दी ही । ऐकर से ऐक किसम के धान नई बोय के हमला अपन खेत में पुराना देशी बीजा ला चुन कें बोना जरुरी हे।

अगर हमर पास देशी धान कें एक ठन बीजा घलो बांचे होही, तभो ले ओला बो कें ओकर कन्सा ला फोर-फोर के जगाय के उपाय से हम एके मौसम में या दू मौसम में पूरा फसल ले सकत हन ।

बीजा के चुनाव

हमला अपन खेती के उपज ला बढ़ाय बर हमर पुरखा के जुन्ना किसम के धान मन ला जांचे परखे बर लागही । एकर एक तरीका हे कि हमर पास पड़ोस के खेत ले या गांव के दूसरा किसान मन करा ले, कई किसम के धान के दस-बीस ठन बीजा ला अपन खेत में जगा के फसल के उपज ला देखना हे कि कौन किसम के धान में बीमारी कम होथे, अऊ पैदावार ज्यादा होथे । येला हमला जांचना जरुरी हे । जौन किसम के धान मे सबले जादा पैदावार होही अऊ बीमारी कम होही वैसने किसम के धान ला हमला बोना हे ।

अइसन तरीका ले हमर खेत के माटी, पानी, मौसम के हिसाब से कोन किसम के धान में जादा फायदा होइस ओकर चुनाव हो सकथे ।

बीजा ला बोये के तरीका

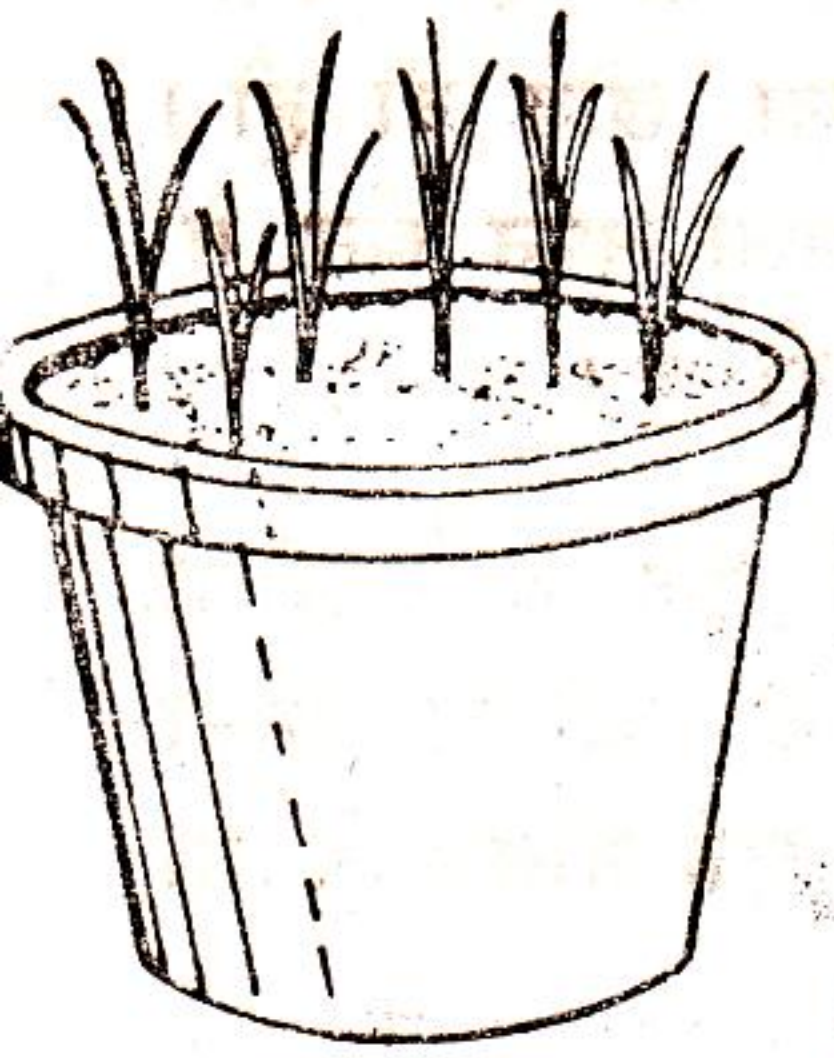

जौन किसम के धान में जादा फायदा होइस, उही किसम के धान ला हमला, गमला या क्वारी में बोना चाहिए । दूसरा किसम के धान ला हम, जतना दुरिहा में बोथन, ऐ किसम के धान ला पेड़ाय बर ओकर से दुगूना जगह के जरुरत पड़थे ।

कौन समय बोये के हे,

पानी के साधन हे तिहां, माघ महीना में ।
पानी के साधन नई हे तिहां, जब धान के-
खेती शुरु होथे तब बोना हे ।

कन्सा ला फोरे के तरीका

धान के पेड़ ला जागे के दस-बीस दिन के बाद कन्सा फुट जथे । फुटे के सात-आठ दिन के बाद पेड़ ला जड़ सहित उखाड़ना हे । मान लो जड़ टूटे के डर हे तो जमीन में पानी डालना जरुरी हे ।

पेड़ (थरहा) ला उखाड़े के बाद ओला कलम करना हे । (थरहा के पत्ता ला काटना हे)

(पाला करना हे)

(पाला करे के बाद के थरहा)

१. पाला करे से थरहा हर नि पकलाय अऊ जादा दिन होय के बाद भी ओमें बाल नई निकले ।

२. पाला करे के बाद थरहा के जड़ ला धोये ला लागही। ओकर बाद थरहा में जतिक कन्सा हे, सबला नख में चिमट के अलग-अलग फोरे बर लागही । कन्सा फोरत खानी ध्यान रखे के हे, कि सब कन्सा में जड़ रहना जरुरी हे ।

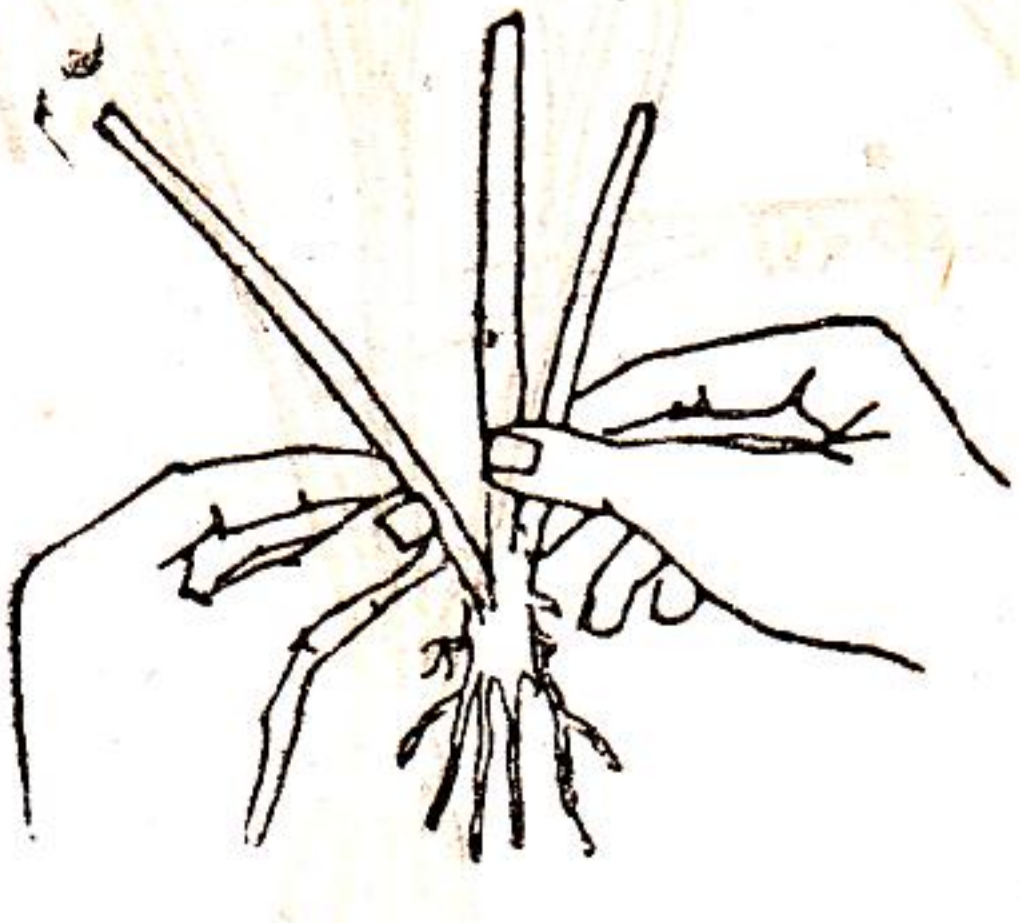

(नख से कन्सा ला अलग करे के तरीका)

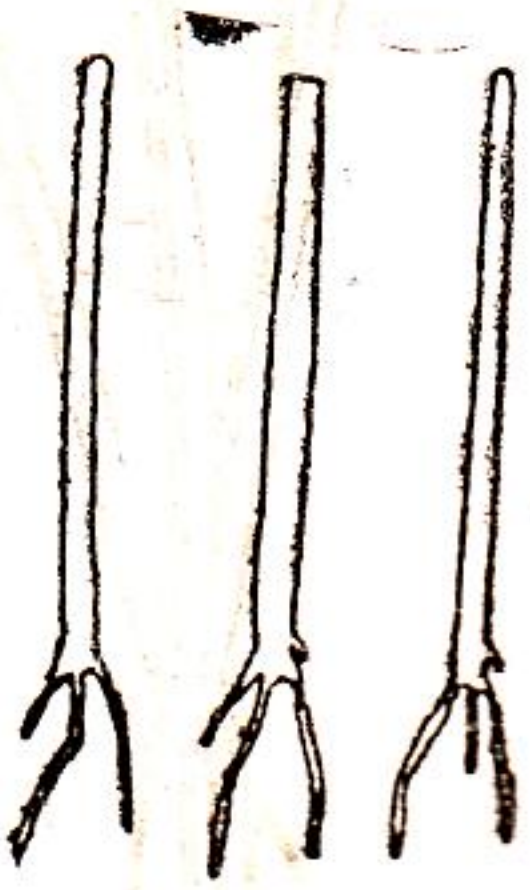

(अलग-अलग कन्सा)

ये सबो पेड़ येके बीजा के पेड़ होय के खातिर, सबो कन्सा में जादा फायदा वाला बीजा के गुण हे ।

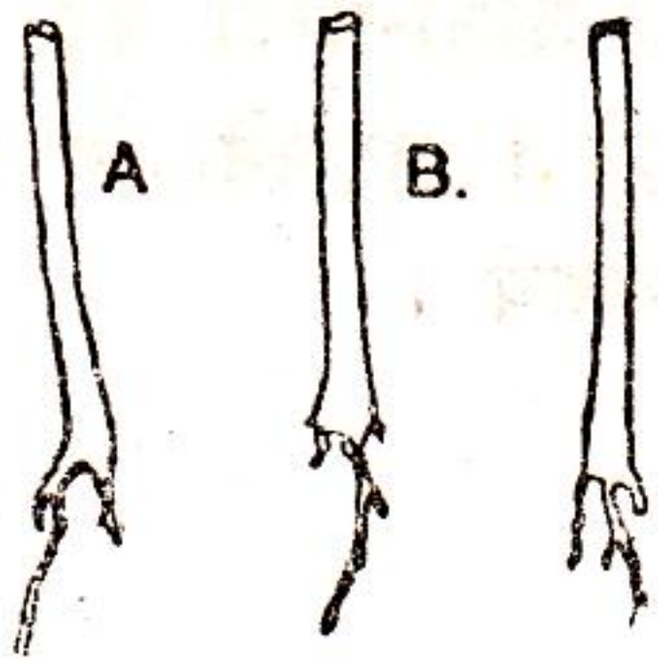

येके बीजा ले येके गुण वाले तीन पेड़ तैयार– अब ये कन्सा ला अलग-अलग एकक ठन बोना हे । अऊ दूरी साधारण धान के पेड़ के बराबर रखना हे ।

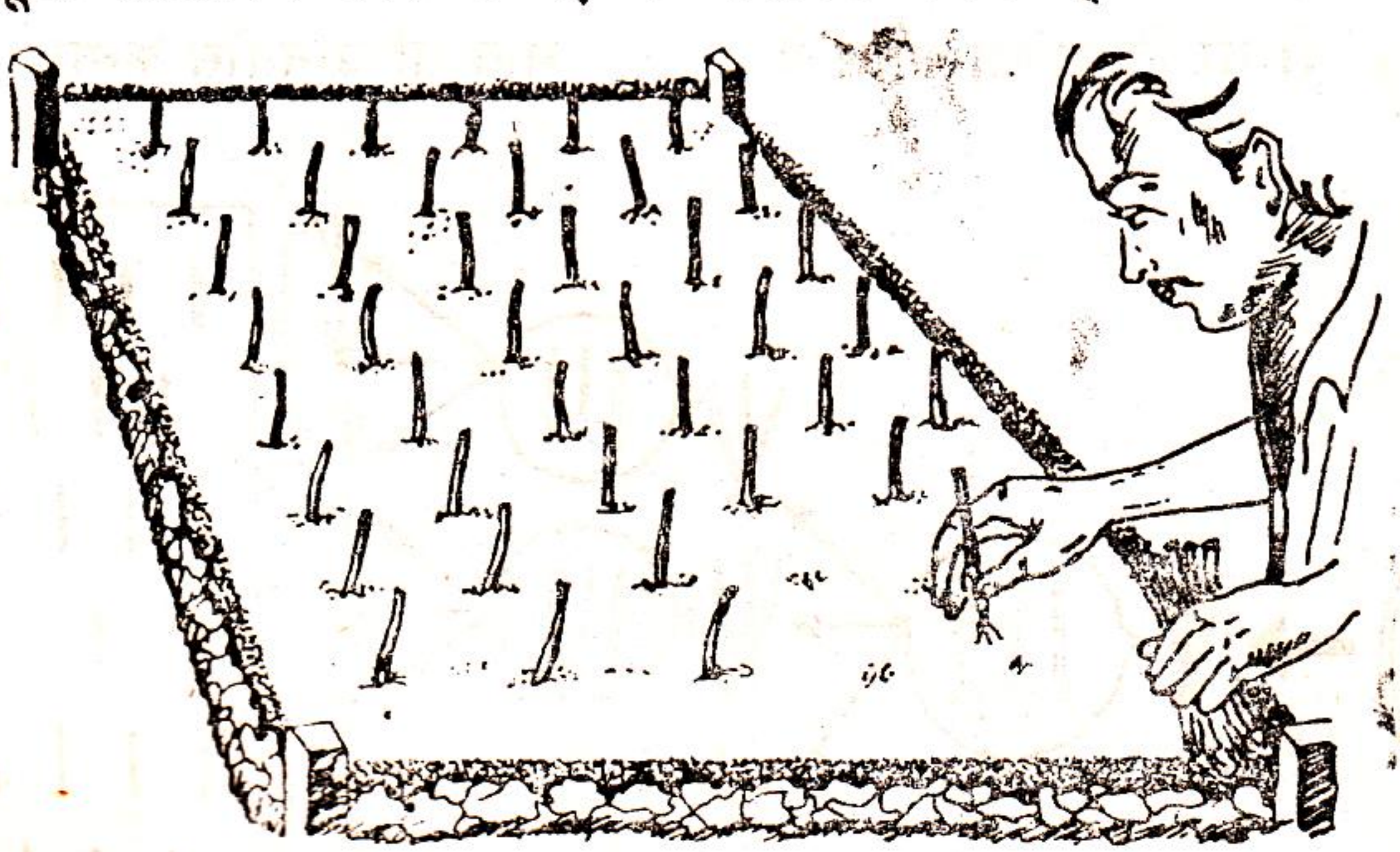

कन्सा लगाये के हप्ता दू हप्ता बाद फिर से पेड़ बनके ओमे कन्सा फूट जये । कोई-कोई पेड़ में जादा कन्सा फुट्थे अऊ कोई-कोई पेड़ में कमती फूटथे । (गर्मी अऊ नमी) (दंद व कुहक) में कन्सा जल्दी फुटथे । ठंडा में देरी लगाथे ।

कन्सा ले जागे पेड़ हा अऊ जतिक कन्सा फेंके हे, ओला फेर ओइसने उखान के पाला करके, कन्सा ला अलग-अलग फोर के अऊ ओतरी दुरिहा-दुरिहा में जगाना हे ।

एक ठन धान के बीजा ले तीन-चार ठन कन्सा निकलही जेला अलग-अलग फोरे के बाद में तीन-चार ठन पेड़ बन जही। अब वो तीनों-चारों पेड़ के तीन-तीन, चार-चार कन्सा अऊ फुटही। अइसने ढंग से छे बार में सात सौ उन्नतीस पेड़ हो सकथे।

एक बीजा से	तीन कन्सा
तीन कन्सा से	नौ कन्सा
नौ कन्सा से	सत्ताइस कन्सा
सत्ताइस कन्सा से	इक्यासी कन्सा
इक्यासी कन्सा से	दो सौ तिरालिस कन्सा
दो सौ तिरालिस कन्सा से	सात सौ उन्नतीस कन्सा

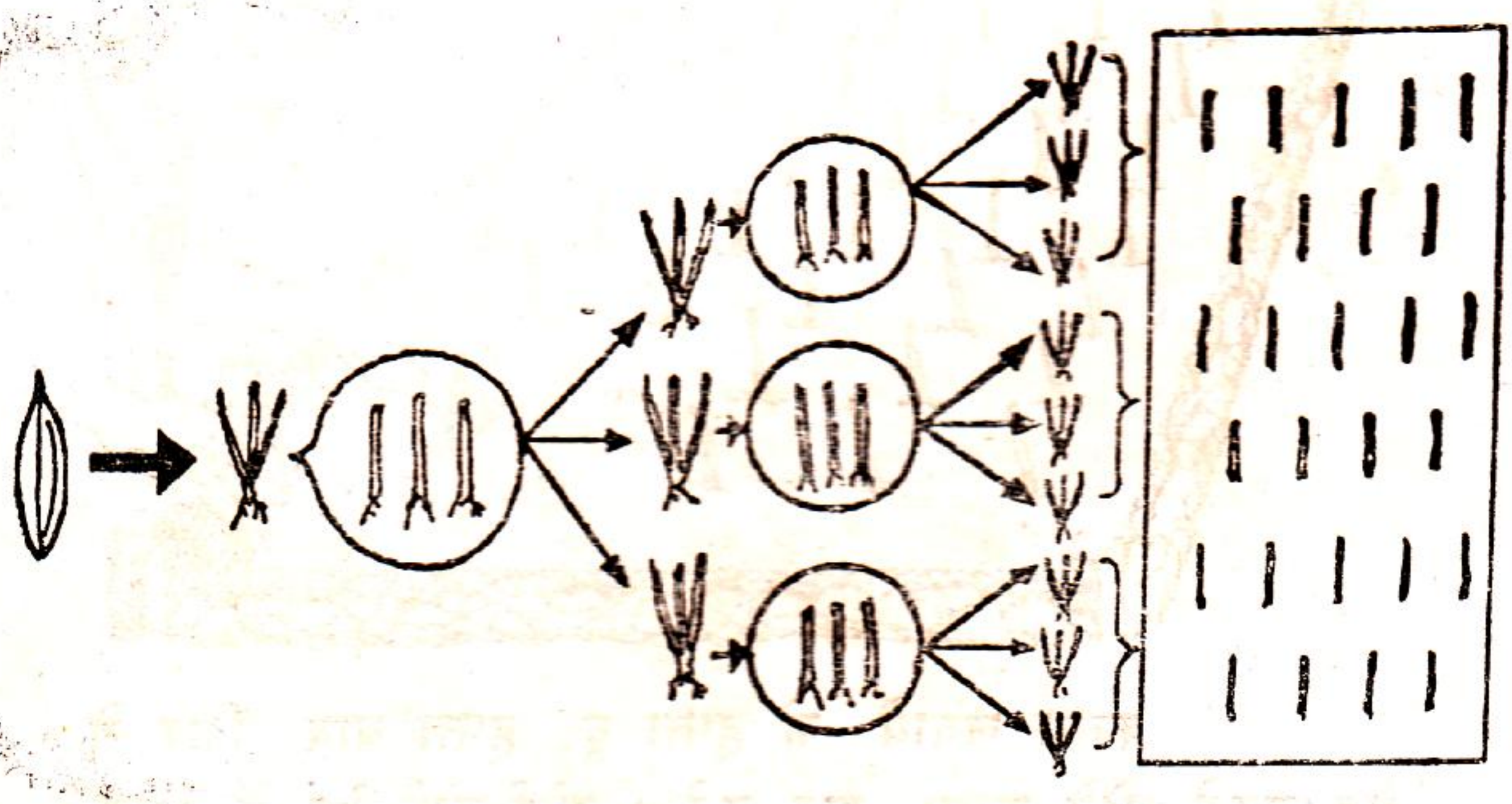

ये किसम ले पूरा खेत भर में धान के पेड़ हो जही। फेर कन्सा तब बक निकालना हे, जब तक थरहा जगाय के समय रही। रोपाई तक जतिक भी कन्सा निकलथे तब तक निकाल के बन्द कर देना चाहिए। येकर से बाकी फसल के संगे-संग हमला हमर फसल मिल जही। नहीं ते जादा लालच करे में हमर फसल पिछवा जही।

जोन खेत में पानी के साधन नई हे, ओ खेत में रोपा लगाय के बदला सिर्फ कन्सा फोरत रेहे में जादा फायदा होही। अहू तरीका ले हम रोपा से जादा धान उपजार सकथन।

कन्सा फोर-फोर के खेती करे ले फायदा

१. कन्सा फोर के जगाय में धान में बीमारी अऊ किरा कम लगथे।

२. बाल छाट के निकलथे अऊ ठोस पाकथे।

३. चार ठन बीजा ला अषाढ़ में बोय से सावन में रोपा लगात तक एक एकड़ भर पेड़ भर जथे।

४. पेरा के कमी नई होय।

५. धान के पैदावार मामूली मेहनत से कन्सा फोरई में डेढ़ गुना बढ़ जथे। याने जोन खेत में साधारण बोवाई से एक गाड़ा धान होथे, ओ खेत में साधारण कन्सा फोरई से सवा से डेढ़ गाड़ा धान हो सकथे।

६. देशी बीजा के सही चुनाव, गोबर, घुरुवा खातू, अऊ कन्सा फोरे के सही तरीका ले पैदावारी बाढ़थें।

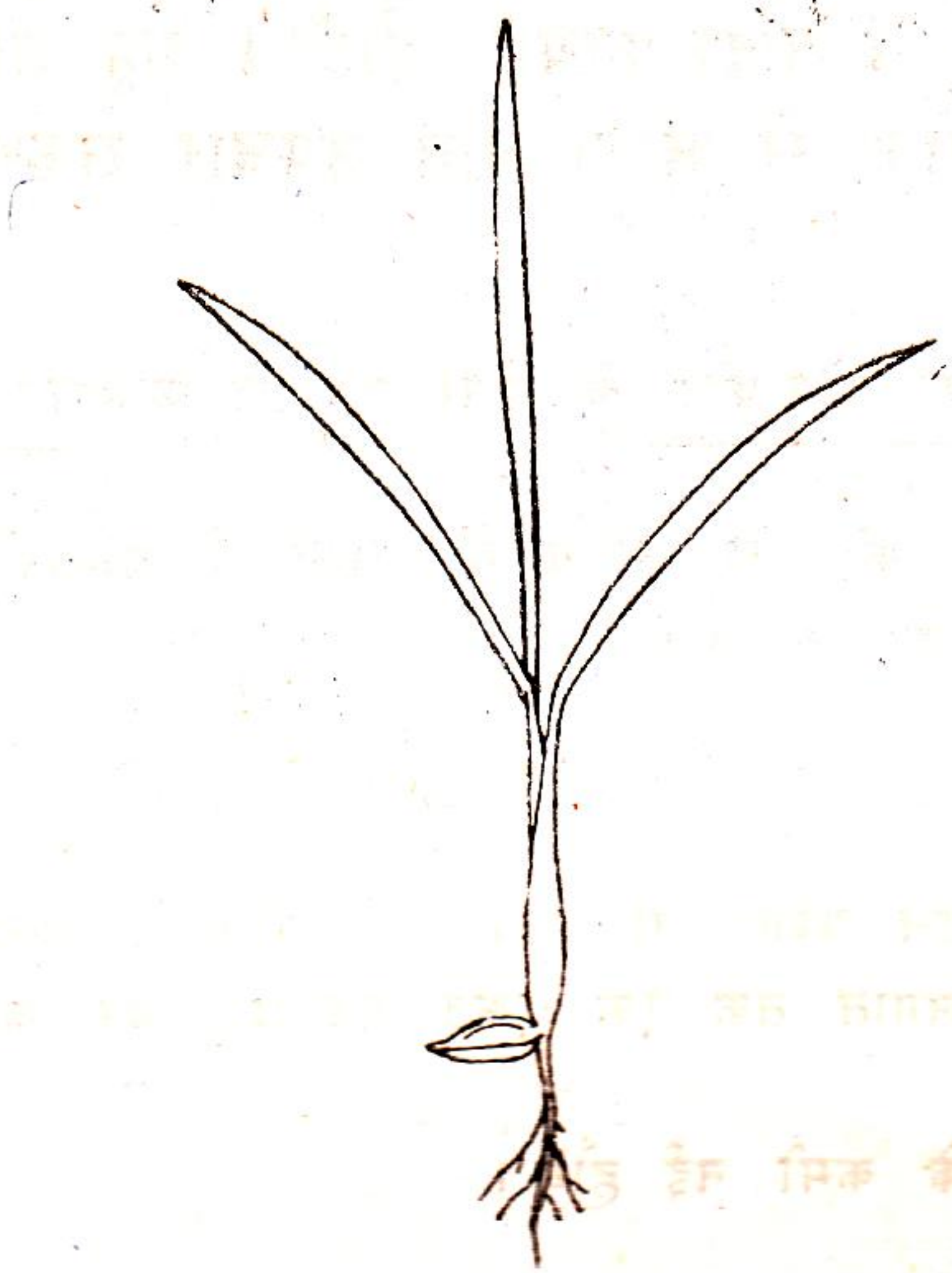

धरती में सोना उगाने वाले भाई रे,
माटी में हीरा उगाने वाले भाई रे,
उठ तेरी मेहनत को लूटे हे,
कसाई रे ।

मेहनत करके पैदा करथे
ये भुंइया मा धान ।

मेहनत करके पैदा करथे. ये भुंइयां मा धान
सबके जीवन बर संगवारी. अन्न के दाता किसान ।
बरसा के पानी तोर मुड़ ले बोहाथे, सबला ते सहिजासथ गा,
कतको पानी बरसथे संगी, तबले खेत मा रहिथस गा ।
करथो बियासी अऊ गा निंदाई, कमरा खुमरी ला तान ।
सबके जीवन. . . ।

खेती के करथो रखवाली, मांघ पुस के जाड़ मा गा,
एक ठन धोती मा करथो गुजारा, झाला बना के कोठार मां गा,
घर कुरिया ला छोड़ के संगी, खेत मा गड़े मचान ।
सबके जीवन. . . ।

कड़कत घाम मा चुहे पसीना, मोती बुन्द समान गा,
गरम हवा के झोंक हा चलथे, तब नई छोड़व काम गा,
कब हे बिहनिया, कब हे मझनिया, सब तोर एक समान ।
सबके जीवन. . . ।

तुंहरे भरोसा मा दुनिया जीयत हे, सब दुख ला तुम सहिथोगा,
पसिया ला पीके दिन ला बिताथो, सदा खुश तुम रहिथोगा,
सबला अनाज देथो किसनवा, रोक भुंइया के भगवान ।
सबके जीवन. . . ।